दोहरा॥ वा [illegible] बैनो [illegible] कानेस [illegible] क [illegible]



नराहिजे॥ राजारामम हैस ॥२७॥ सू[illegible]
पु॥ वेदाहनी॥ मुषजिम्याकारिध॥ सा
यादरसन श्वानकैो॥ जदाजाऊआज
हासिध॥२८॥ विरछइंडादहरी॥ मृत
नदेवैश्वान। मांटीछियेसोनैामिलै॥ ज्ञानीकथिगएज्ञान
॥२९॥ परवकिया। आषरी। सृपजोपथरासूकेकाठ॥ मृतनदेह
श्वानके॥ परकैावाधैठाठ॥३०॥ उंचेवैठैसांमन्हे॥ श्वानषु
जावैक॥ [illegible]॥ द्विभोवदेसुषसदजदी॥ आवैनदीसमान॥३१॥

॥ २०॥ दोटतहेस[illegible] ठफरफरकर ॥ कूकरवैरी
घाट॥ घाटनचलियेयुथसर ॥ २१॥ अथमदीलियेगुजरीमिलेअ
थवावेटीसासुरजात॥ दोहरा ॥ मदी
लियेमहरामिले॥ वेटीसासुरजात॥ स
वसुषहहदेसोनिया॥ सोहरामकीषात
॥ २२॥ अथविलैयाकोसुगन॥ दोहरा॥
सनमुषआवेसुष
पनो॥ मुषमैलिये
अहार॥ सुगनवि

दीसोर ॥४१॥ अथटीटहीकोलिषते ॥ दोहरा ॥ वाइबोलैत्र



तिभली ॥ वाइडुषकीमूल ॥ सगुनटीटही
कोभलो ॥ कहानजीककलाङ्गर ॥४२॥ अ
थजलकूकडीकोसुगन ॥ दोहरा ॥ पानीवा
हरबोलही ॥ नदीतीरकेपार ॥ जलबोलैज
लकूकडी ॥ यहइसगुनविच्यार ॥४३॥ अ
थस्याल सुसा सिंघकोसुगन ॥ दोहरा ॥



वांयोस्यालबायोसुसाबायोनाहरदेष
मुषमागैसापायेहा ॥ जोचाहेसोलेष ॥ इतिसुगनसिंघस्याल

सींगासको ॥ अथहातीकोसुगनलिषत ॥ दादरा ॥ वालननैहे



अनिदादनै ॥ धरेंकूंषपरसु
हु ॥ हाथीसगुनसाथीकेद्यो
देषोग्रंथनदृढ ॥ ४५ ॥ पावउ
ठाबेदादनै ॥ धरैकधपर
सुंउ ॥ हाथीसगुनसाथी
कद्यो ॥ देषोग्रंथनदृढ ॥
॥ ४६ ॥ इतिहातिकोंसगु
नसमापतिभया ॥ श्री ॥

चलीदिवारीकोदिना॥ षंजनबैठेकंजपर॥२५॥अथबुलबुल
कोसगुन॥दोहरा॥ दाहनीबोलैलाभअति॥ बाइसिथचरचा
ल॥पाछेबुलबुलबोलिये॥ तौजांनौनिजकाल॥२६॥ चुनमुष
मेसनमुषमिलै॥ सनमुषकीजैगोन॥ प्यारीकहतप्रवीनसे॥स
गुनैयाकोसोन॥२७॥अथउटकोसुगन॥दोहरा॥ वायासुभ



लीजैसदा॥ असुभदाह
नैहोइ॥ लंबयिचावल
वलकरै॥ सुनैसयानैलो
य॥२८॥इतिलमयिचा







अथगोंउकैसगन ॥दोहरा॥ दांहीरांभैअतिभली ॥ गाइजुवाछीजा
न॥ सोनसिराहतसोनिया सोन
ननकेउनमान ॥अर्थ॥ वांईअराधी
रातिपर ॥ रांम्हतसुनियेगाइ धनी
मरैकैदेसपै ॥ पडैअचिंतीधाडि ॥
॥४०॥ अथगाईभैसरकोछेडेता
कोसुगन ॥दोहरा॥ महिषिवैलर
कठाषडा ॥ चलततजुदेषैकोइ ॥ वी
सविसैवसिकालके ॥ भयोजांन

लैयाकोमलै॥ मिलैकनककरतार॥ दोहरा॥ वायेदेरवृछपै॥ स

॥दोहरा॥ वारवारवोलैदिवस॥ उत्तमनलैइ॥ वायेजसुभसु





पसंपतमिलैजे॥ वोलैसुवासुषदेव॥

जदपिसंधमें॥ अथसारोकौंसुगन॥ दो

प्यारीकहतप्रहीवोलैजतिभली॥ सा

षालि॥ २८॥ निवास॥ तुरतमिलावैमि

॥ दोहरा॥ पाछैकैरैसवकोनास॥ २९॥

वोलनजुवाल॥ रसकेवृछपर॥ वाइंसा

हीसगुनकोमेगमननकीजैभवनसे

अथगोउकौसगन॥दोह





सनमुषबोलनहो॥ सनमुषबैठोदेष
सुषसंपतदंपतमिलै॥ सारसस
पुनविसेष॥२८॥ अथसगुनमो
रको॥दोहरा॥
दंपतसुषसंपत
मिलै॥नासत
घरकौरोग॥च
तगुनसराहतमो
पुरने॥श्री॥श्री



॥२९॥ अथसुवाकोसुगननिषते॥दोहरा॥ वायेंहरेबृछपे॥स



नमुषसैमनलेइ॥वायेंअसुभसु
नदाहहैनै॥वोलैसुवासुषदेव॥
॥३०॥ अथसारोकोसुगन॥दो
हरा॥दाहीवोलैअतिभली॥सा
रोसुषनिवास॥तुरतमिलावैमि
त्रको॥करैसत्रकोनास॥३१॥
सनमुषसकेबृछपर॥वाइसा
रोहोइ॥गमननकीजैभवनसे

सुनैंासयानैलोय ॥३२॥ अथकपोतकोसुगन ॥दोहरा॥



चुंन्यकुरीदैवायेपग ॥ सुष्य
दिषावैअ्रान ॥ सांचैासगुन
कपोतको ॥ नीजैमाथैामा
न ॥३३॥ अथकोडीलाको
सुगन ॥दोहरा॥ वायापाछेकोंअसुभ ॥ हायोवालसुवाल



कोडीलाकेसुगनको ॥ नाहीमाल
अमाल ॥३४॥सोरठा॥ हयगयहे
वरहेरत्रन पुनपुनफलेव्रछपर

सुचलासूपलाजान॥ बगुलाअरविलावेजे॥ बायेसहसुषदान
॥पर्यो दाद्दरा॥ विनाधुवांपावकससा॥ करकटघोरोहार॥ बाया
बाघसारसलसुवा॥ डेकरचात्रकसोइ॥५०॥ डुजउजेरकपरा
त्निये॥ मिलेजोबायोअंग्रान
रावऋषेसिंधकहतहे॥ सु
गनमहाफलमान॥५१॥





अथ दुजरान॥ महर को चरकलस को सुगन॥ दोहरा॥ कुंभकलस



सतावो कलस॥ महर
को वरीरंग॥ कछकल
मिनपुत्रतियै॥ दाहिन
लैनै उचतुरंग॥ ४१॥
अथ निरपतुरंग असवार अथवा वाजे अथ



वागन को सुगन॥ दोहरा॥ दधदौनाकरमोरगा निर्पतु
रंग असवार वाजनिसानगन का त्रिया हदाहनै सुभसा॥



अथस्वानसिंघसीगोसलोबगधेवकोसुगन॥४७॥दोहरा



स्वानसिंघसी
गोसपुन॥लोब
रीगधेवसोइ॥
बायेचलततेजो
बोलहो॥सुग
नमहाफलहो
इ॥४८॥अ

थतीतरदेपियकागकोसुगन॥दोहरा॥तीतुरदेवियर्कगडुन